सूफी दर्षन–भारतीय एवं पाष्चात्य दर्षन के परिप्रेक्ष्य में

AMIT KUMAR SINGH
Reseach Scholar
University of Allahabad

।इेजंबज.सूफी दर्षन की नींव इस्लामिक दार्षनिक पद्धति पर आधारित है। सूफी दर्षन इस्लामिक रहस्यवाद का प्रतीक हैं सूफी बाहरी अनुष्ठान या पद्धति की अपेक्षा आन्तरिक सत् पर ज़ोर देते हैं। इस्लामिक दर्षन में इसे 'तसव्वुफ' के नाम से जाना जाता है। सूफी दार्षनिकों ने इस्लाम के दार्षनिक प्रभावों को ग्रहण तो किया लेकिन साथ ही साथ कई अन्य दार्षनिक प्रभावों को भी स्वीकारा तथा अपने दर्षन की नीव रखी।सूफी दर्षन पर मूल प्रभाव इस्लाम का है इस्लामिक दर्षन सूफी दर्षन का केन्द्र बिन्दु है सूफियों ने इस्लाम के कुछ दार्षनिक सिद्धान्तों को स्वीकार किया लेकिन कुछ सिद्धान्तों को वे अस्वीकार करते हैं।सूफी दर्षन पर इस्लामिक दर्षन के साथ–साथ भारतीय दर्षन के कुछ सम्प्रदायों, इसाईमत तथा नवप्लेटोवाद का भी प्रभाव रहा है। जुन्नैद,षिबली और मंसूर हिल्लाज ने उपरोक्त दर्षनों से प्रभावित होकर सूफीमत को एक नई दिषा प्रदान की।

भूमिका–सूफी दर्षनइस्लामिक रहस्यवाद का प्रतीक है। खुदा के पास पहुँचने का यह इस्लामिक मार्ग है जिसमें कठोर साधना पद्धति और प्रार्थना समाहित है, सूफी बाहरी अनुष्ठान या पद्धति की अपेक्षा आन्तरिकसत् पर ज़ोर देते हैं। इस्लामिक दर्षन में इसे 'तसव्वुफ' के नाम से जाना जाता है। लेकिन पाष्चात्य लेखकों ने 'तसव्वुफ' के लिए 'इस्लामिक रहस्यवाद' षब्द का प्रयोग किया है। वर्तमान में सूफी उसे कहा जाता है जो तसव्वुफ का अनुयायी है अर्थात् इष्कमज़ाज़ी के रास्ते पर चलता हुआ इष्कहकीकी (अर्थात् खुदा के प्रेम) की उपलब्धि करना चाहता है। सूफी दर्षन की उत्पत्ति कुरान में निहीत है जो यह प्रकट करता है कि खुदा प्रथम भी है और अन्तिम भी है, खुदा बाहर भी है और भीतर भी है। कुरान यह भी कहता है कि आप जिधर भी घूमते हैं वहाँ खुदा का चेहरा रहता है। यहाँ यह भी जोर दिया गया है कि खुदा अकेला है और सबकुछ है और उसके अलावा बाकी सब नाषवान और मूल्यरहित है। इसलिए यह कहा जाता है कि सूफी वो हैं जो दोनों दुनिया(अर्थात् मन के बाहर और मन के भीतर) में अल्लाह के अलावा कुछ भी नहीं देखते।

सूफी दर्षन पर विचार करने से पहले सूफी षब्द की उत्पत्ति के बारे में जान लेना आवष्यक है। एक मत के अनुसार सूफी षब्द 'सफ' से विकसित हुआ है जिसका अर्थ होता है ऊन या ऊनी कपड़ा। सूफी साधक षुरूआती समय में भेड़ या बकरी के ऊन से बने कपड़े धारण किया करते थे, षायद इसीलिए उन्हें सूफी कहा गया। दूसरा मत यह है कि सूफी षब्द की व्युत्पत्ति 'सफा' षब्द से हुई है जिसका अर्थ है पवित्रता या षुद्धि की अवस्था। इस मत के समर्थक मानते हैं कि चूँकि सूफी साधकों का आचरण अत्यन्त षुद्ध और पवित्र था, इसलिए उन्हें सूफी कहा गया। कुछ विद्वानों ने एक तीसरी व्याख्या भी की है जो सफा षब्द पर आधारित है। इनके अनुसार मदीना की मस्जिद के बाहर मक्का की एक प्रसिद्ध पहाड़ी का नाम सफा है।

जिन लोगों ने मुहम्मद पैगम्बर के रास्ते पर चलते हुए उस पहाड़ी पर षरण ली वही आगे चलकर सूफी कहलाए।

सूफी का सम्बन्ध मूलतः इस्लाम धर्म से है, किन्तु इस्लाम द्वारा प्रतिपादित दार्षनिक मान्यताएँ इनकी साधना पद्धति के अनुकूल नहीं है। यही कारण है कि सूफियों ने इस्लाम के दार्षनिक प्रभावों को ग्रहण तो किया लेकिन साथ ही साथ कई अन्य दार्षनिक प्रभवों को भी अस्वीकारा तथा अपने दर्षन की नीव रखी। इस्लाम में माना गया है कि कुरान के नियम आत्यन्तिक हैं और स्वयं खुदा ने मुहम्मद पैगम्बर के माध्यम से उसमें अपनी ही वाणी को प्रस्तुत किया है। सूफियों का मतहै कि खुदा ने बन्दे को दो प्रकार के ज्ञान दिए हैं–'इल्म–ए–सकीना' और 'इल्म–ए–सिना'। 'इल्म–ए–सकीना' वह ज्ञान है जो खुदा ने मुहम्मद पैगम्बर के माध्यम से अर्थात् कुरान के रूप में सभी को दिया है, जबकि 'इल्म–ए–सिना' वह ज्ञान है जिसे खुदा ने साक्षात् बन्दे के हृदय में स्थापित किया है। सूफी दोनों ज्ञानों को प्रामाणिक मानते हैं किन्तु 'इल्म–ए–सिना' की प्रामाणिकता उनकी दृष्टि में अधिक है। इसी आधार पर उन्होंने अपने दर्षन की रूपरेखा तैयार की है।

सूफी दर्षन पर मूल प्रभाव इस्लाम का है इस्लामिक दर्षन सूफी दर्षन का केन्द्र बिन्दु है सूफियों ने इस्लाम के कुछ दार्षनिक सिद्धान्तों को स्वीकार किया लेकिन कुछ सिद्धान्तों को वे अस्वीकार करते हैं। सूफी परम्परा इस्लाम के भीतर ही उत्पन्न हुई लेकिन उनके उन्मादि, दिखावटी एवं कट्टर धर्मान्धता के विरूद्ध हुई प्रतिक्रिया का प्रतीक थी। सांसारिकता और भोगविलास में डूबे जनमानस को झकझोर कर उठाने के लिए ही इसने आन्दोलन का स्वरूप लिया। सूफी सन्त भटके मानव को खुदा का संदेष सुनाते थे और सत्पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देते थे यही जीवन का सार है, षेष निस्सार है। फलतः प्राचीन सूफियों का जीवन सरलता और पवित्रता से ओतप्रोत रहता था।

सूफी दर्षन में इस्लाम की कट्टरता एवं संकीर्णता का कोई स्थान नहीं है बल्कि सनातन धर्म की उदारता, सहिष्णुता के साथ एक ही परमतत्व का वेदान्तिक स्वर सुनाई पड़ता है। सूफी दर्षन की उत्पत्ति इस्लाम धर्म से हुई है तो यह आवष्यक था कि इस्लामिक दर्षन का प्रभाव सूफी दर्षन पर पड़े लेकिन यहाँ एक बात ध्यान देने की है कि भारतीय दर्षन में विद्यमान अद्वैतवाद, बौद्ध दर्षन, जैन दर्षन, इसाई मत तथा नवप्लेटोवाद का भी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।इस्लाम मानता है कि खुदा, जगत् और जीव तीनों की वास्तविक तथा भिन्न सत्ताएँ हैं। खुदा इतना पवित्र है कि उसे जगत् या जीव से अभिन्न नहीं माना जा सकता। पुनः इस्लाम के अनुसार खुदा और बन्दे में राजा और प्रजा या स्वामी और दास का सम्बन्ध है, प्रेम का नहीं। इन मान्यताओं को बदलना सूफियों के लिए आवष्यक था इसलिए सूफियों ने इस्लाम की पारम्परिक धारणा में संषोधन करते हुए 'तसव्वुफ' के दर्षन को मान्यता दी। सूफियों ने परमात्मा को प्रेमिका एवं बन्दे को प्रेमी के रूप में परिकल्पित किया है सूफी लोग खुदा के साथ भय का नहीं वरन् प्रेम का सम्बन्ध स्थापित करते है। सूफियों का लक्ष्य 'मारिफत्' यानी सिद्धावस्था की उपलब्धि करना है जिसमें साधक अपनी आत्मा को परमात्मा में लीन (फना) कर देता है। ये इष्कमज़ाज़ी से इष्कहकीकी तक की यात्रा में विष्वास रखते हैं।

सूफियों के अनुसार मनुष्य के चार विभाग हैं– नफ़्स, अक्ल, कल्ब और रूह। नफ़्स का अर्थ इन्द्रियों से है, अक्ल का बुद्धि से, कल्ब का हृदय से और रूह का आत्मा से। इनकी मान्यता है कि खुदा की प्राप्ति कल्व अथवा हृदय से ही हो सकती है, क्योंकि कल्ब में ही खुदा का प्रतिबिम्ब व्यक्त होता है। यह दर्पण या हृदय

जितना निर्मल होगा, खुदा का प्रतिबिम्ब उतना ही स्पष्ट होगा। सूफी जगत् की वास्तविक सत्ता स्वीकार करते हैं, किन्तु जगत् को खुदा का कार्य नहीं बल्कि अभिव्यक्ति मानते हैं। यह मत सूफियों को बहिर्मुखी रहस्यवाद की तरफ ले जाता है। बहिर्मुखी रहस्यवाद के अनुसार खुदा और आत्मा के साथ जगत् भी एक ही है। सूफियों के अनुसार बन्दा अपनी साधना से खुदा से एक हो सकता है। यह भाव यहाँ अन–अल–हक कहलाता है, जिसका अर्थ बन्दे और खुदा की एकता ही है। यह विचार इस्लाम के विरूद्ध है लेकिन अद्वैतवाद से प्रभावित है। बन्दा खुदा की प्राप्ति प्रेम के माध्यम से करता है और यह प्रक्रिया लौकिक प्रेम या इष्कमज़ाज़ी से आरम्भ हो कर ईष्वरीय प्रेम अर्थात् इष्कहकीकी में समाप्त होती है। सूफियों के दर्षन में गुरू का अत्यधिक महत्व है क्योंकि वही खुदा की प्राप्ति में साधक को समुचित ज्ञान प्रदान करता है सूफियों के दर्षन में यह जरूरी नहीं कि गुरू का कोई मानवीय रूप हो बल्कि यह प्रकृति का कोई भी अवयव हो सकता है। सूफी दर्षन में यह बताया गया है कि जब साधक सम्पूर्ण प्रक्रिया से गुजरता है तो उसकी साधना के अन्तर्गत चार अवस्थाएँ आती हैं– षरीअत, तरीक़त, मारीफ़त व हकीकत। षरीअत सामान्य अवस्था है, जिसमें कुरान के नियमों का पालन करना होता है। जब हृदय षुद्ध होता है, तो वह अवस्था तरीकत कहलाती है। इसमें ईष्वर की साधना का वास्तविक आरम्भ होता है। मारीफ़त का अर्थ है ईष्वरीय अनुभूति का होना। हकीकत अन्तिम अवस्था है, जब बन्दे को खुदा की प्रप्ति हो जाती है। इसके अन्तर्गत वह फ़ना होकर बका की प्राप्ति करता है।

सूफी दर्षन पर इस्लामिक दर्षन के साथ–साथ भारतीय दर्षन के कुछ सम्प्रदायों, इसाईमत तथा नवप्लेटोवाद का भी प्रभाव रहा है। जुन्नैद,षिबली और मंसूर हिल्लाज ने उपरोक्त दर्षनों से प्रभावित होकर सूफीमत को एक नई दिषा प्रदान की। मंसूर ने कहा 'अन–अल–हक' अर्थात् मैं ही खुदा हूँ। वह निराधार एवं सर्वाधार है। उसका न कोई औलाद है और न ही वह किसी की औलाद है। मंसूर का यह 'अन–हल–हक' वेदान्त के 'अहम् ब्रह्मास्मि' से प्रभावित है। सूफी दर्षन और भारतीय वैदिक चिन्तन धारा के बीच काफी समानता दिखती है। भारतीय वेदान्त के अद्वैतवाद, विषिष्टताद्वैत आदि दर्षन के सिद्धान्तों तथा सूफी विचारों बहुत अधिक साम्यता दिखाई देती है। इब्तुल अरबी परमात्मा के बारे में कहता है 'हमावस्तु' अर्थात् सबकुछ वही है जिसके सम्बन्ध में कुरान की आयत भी कहती है–'इन्नाखिलाह' और 'इन्नाइल्लैहे राजयून' अर्थात् हम परमात्मा से पैदा हुए हैं और परमात्मा में ही लौट जाएंगे। परमात्मा सम्बन्धी यह विचार तैत्तिरीयोपनिषद के इस ष्लोक से बहुत कुछ मिलता है–

''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति।

यत्प्रय्न्तभिषंविषन्ति। तद्धि जिज्ञासस्व। तद्ब्रह्मेति।''

अर्थात् जिससे ही ये सर्वभूत उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होने पर जिसके आश्रय पर वे जीवित रहते हैं और अन्त में विनाषोन्मुख होकर जिसमें वे लीन होते हैं उस विषेष रूप को जानने की इच्छा उनमें रहती है, वही ब्रह्म है।

सूफी दर्षन का यह कथन कि ''वास्तव में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक ही आत्मा है जो विभिन्न पदार्थों और जीवों के रूप में अभिव्यक्त होती है।'' ष्वेताष्वर उपनिषद के अध्याय 6 के ष्लोक 11 से मिलता जुलता है। इसी प्रकार जिल्ली का परमात्मा और सृष्टि विषयक विचार छान्दोग्य उपनिषद के अध्याय 6के प्रथम खण्ड के मंत्र

(4–6) में स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित हो रहा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूफी दर्षन पर भारतीय उपनिषदीय विचारधारा की स्पष्टछाप है। सूफी मत पर योग दर्षन का भी प्रभाव दिखता है ‘लतायफिसित्ता’ नामक सिद्धान्त सूफियों में प्रचलित है। सूफी ज़िक्र(ध्यान) आदि की क्रियाओं द्वारा एक के बाद एक ‘लतीफ’ को जागृत करने में सफल होते हैं और अन्त में उन्हें प्रकाष के दर्षन होते है। जैसे–जैसे सालिक (साधक)ऊपर की ओर बढ़ता है वह विभिन्न रंगों के दर्षन करता है। इस तरह साधक को सित्ता (6) लतीफों को जाग्रत करना पड़ता है। इस सिद्धान्त के प्रवर्तक ग्यारहवीं षताब्दी के षेख अहमद नक्ष बंदी थे।‘लतायफीसित्ता’ सिद्धान्त कुण्डलिनी चक्र के सिद्धान्त से बहुत कुछ मिलता जुलता है। इसकी नफ्स, कल्ब, रूह, सिर्र, खफी और अल्फा ये 6 अवस्थाएँ मूलाधार, स्वाधिष्ठान आदि चक्रों से साम्यता रखती है। बौद्ध दर्षन का चरम लक्ष्य निर्वाण है, सूफी मत में इसे ‘फ़ना’ कहते हैं। सूफी मत में परमात्मा ही परम सत्य है और उसी में विलीन होना परम लक्ष्य है। इसके लिए वे संसार और भावी जीवन के प्रति अनासक्त हो जाते हैं। यह भावना बौद्ध दर्षन का ही प्रभाव है। बौद्धों की ध्यान और समाधि की कल्पना सूफियों में ‘मर्कबा’ के रूप में जानी जाती है। बौद्धों का एकान्त सेवन सूफियों में ‘खिलवत’ नाम से व्यवहृत है।

सूफी दर्षन पर नवप्लेटोवाद के दार्षनिक प्लॉटिनस का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। प्लॉटिनस ने ईष्वर को एक कहा है जिसे परम षुभ कहा जाता है। प्लॉटिनस का ईष्वर परात्पर है अर्थात् जगत् से परे है। प्लॉटिनस ने ‘एक’ को सर्वोच्च सत्ता माना है। सभी वस्तुओं की उत्पत्ति इसी से होती है। वे इसी में स्थित है, और अन्त में इसी ‘एक’ ईष्वर में विलीन हो जाती हैं। प्लॉटिनस का यह मत सूफियों में भी मिलता है। जहाँ कुरान की आयत कहती है–‘इन्नाखिलाह’ और ‘इन्नाइल्लैहे राजयून’ अर्थात् हम परमात्मा से पैदा हुए हैं और परमात्मा में ही लौट जाएंगे। प्लॉटिनस ने सृष्टि की उत्पत्ति ईष्वर से माना है लेकिन यह उत्पत्ति परिपूर्णता के उत्प्रवाह के रूप में होती है वह सृष्टि को ईष्वर का निष्क्रमण मानते हैं। इसी प्रकार सूफी जगत् की वास्तविक सत्ता स्वीकार करते हैं किन्तु जगत् को खुदा का कार्य नहीं बल्कि उसकी अभिव्यक्ति मानते हैं।

स्पष्ट है कि सूफियों ने अपने इस्लामी आधार को बनाए रखते हुए उसमें कुछ संषोधन किये हैं ताकि वे अपने परमतत्व या खुदा की प्रेमात्मक उपलब्धि कर सकें। वे भारतीय और पाष्चात्य विचारधारा के साथ–साथ मुहम्मद पैगम्बर से पहले के पैगम्बरों को भी महत्व देते हैं। सूफियों की समन्वयात्मक दृष्टिकोण ने भारत की समासिक संस्कृति या गंगा–जमुनी तहजीव के निर्माण में अप्रतीम भूमिका निभायी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- ।स.फनतंदए ्र टसससए 3

2- डण्ज्ञण डेंष्नकंस. भंपउए श्ज्पतउपकीे ठनकनू ीशए ेसंउपब ेजनकपमेए टवस.3 ;1965द्धए चचण316. 317ण

3- श्रैण ज्पतउपदहींउए ेनपि वतकमते पद ेसंउए स्वदकवदए1971एचण195ण

4- बिवचतं ए तण्डणए शैन्थ्थैड्श ;व्तपहपदए ऌतवूजीए म्बसपचेए त्मेनतहमदबमद्ध 2016ए ।दनतंकीं च्त्रौंदए छमू क्मसीपए प्ैठछ 978.93.85083.52.5ण

5- थ्तंहमतए त्वइमतज;1999द्धण भ्मंतजए ैमसिंदक ैवनसण फनमेज ठववोए चच 54.88ण

6- तैत्तिरीयोपनिषद।

7- ष्वेताष्वर उपनिषद, अध्याय 6. 11

8- छान्दोग्य उपनिषद अध्याय 6 प्रथम खण्ड (4–6)।

9- स्टेस , डब्ल्यू. टी. ; ए क्रिटिकल हिस्ट्री ग्रीक फिलॉसफी।